

वाणी का विज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

वाणी या वाक् परस्पर सम्पर्क का माध्यम है। सम्पूर्ण संसार सापेक्ष गति से चल रहा है। एक-दूसरे से आदान-प्रदान करना, वार्तालाप करना, परस्पर सहयोग करके जीवनयापन करना मानव की प्रवृत्ति है। वह ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम एक-दूसरे से वार्तालाप करते हैं। गूंगे आदमी को गुड़ मीठवा लगता है किन्तु वह अपने भाव को वाणी से व्यक्त नहीं कर सकता। संकेतों के माध्यम से वह अपने भावों को व्यक्त करता है। जिससे हम यह जान पाते हैं कि वह क्या कहना चाहता है। एक स्वस्थ व्यक्ति वाणी के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करता है। विचारों से व्यक्ति की गहराई और बौद्धिक क्षमता का पता चल जाता है।

वाणी प्रिय बोलनी चाहिए। वाणी में वह शक्ति है जो किसी भी व्यक्ति को अपनी तरफ आकर्षित कर लेती है। वाणी को व्यक्त करने के लिए कण्ठ, तालु, जिह्वा, मूर्धा, होठ, दन्त आदि स्थान हैं जिनका स्पर्श करते हुए वायु बाहर निकलती है और ध्वनि को वर्णों में व्यक्त कर देती है। पशु-पक्षियों की भी अपनी भाषा होती है। उनके सजातीय उनकी भाषा को समझ लेते हैं। मानव को अहंकार युक्त भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हितकर एवं मधुर वचनों को बोलना चाहिए। वाणी का अपना विज्ञान है। वाणी विज्ञान व्याकरणशास्त्र का प्रमुख विषय रहा है। व्याकरण में अक्षर, वर्ण, ध्वनि, शब्द और वाक्यों पर विशेष व्याख्यान रहता है। मानव जीवन में वाणी का बहुत महत्व है। कबीरदासजी ने लिखा है—

वाणी ऐसी बोलिए मन का आपा खोय,

औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय।

अर्थात् ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो मन के अहंकार को नष्ट कर दें, दूसरों को भी शीतलता प्रदान करें और स्वयं भी शीतलता का अनुभव कराये। वाणी ऐसी बोलनी चाहिए जिससे किसी को कष्ट न हो। झूठ, असत्य नहीं बोलनी चाहिए, किसी की बुराई नहीं करनी चाहिए। वाणी ही मित्र है और वाणी ही शत्रु है। प्रिय बोलने से सभी मित्र बन जाते हैं। कर्कश बोलने से

मित्र भी शत्रु बन जाता है। किसके साथ कैसे वाणी का प्रयोग करना है यह भी ध्यान रखना चाहिए। मनसा, वाचा, कर्मणा सभी प्राणियों के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए। वाणी के द्वारा सभा में वाक् पटुता दिखानी चाहिए।

वाणी का संयम, दृष्टि का संयम, मन का संयम, शरीर का संयम और जीहवा का संयम करने से मानव इन्द्रिय निग्रह कर सकता है। वाणी संयम मनुष्य के लिए बहुत आवश्यक होता है। वाणी द्वारा मानव अपनी अनुभूति और भावनाओं को व्यक्त करके दूसरों को अपनी और आकर्षित कर सकता है। यह ईश्वर की मनुष्य को बहुत बड़ी देन है। आजकल लोग इस अमूल्य निधि का दुरुपयोग कर संसार में अनेक प्रकार के कष्ट दुःख, अपमान, निन्दा आदि सहन कर रहे हैं और अपने जीवन को भी गर्हित और पतीत बनाते जा रहे हैं। इस विषय पर गंभीरता पूर्वक सोचना है कि हम अपनी वाणी के दुरुपयोग को रोककर उसे किस तरह सुंस्कृत, सुमंगलकारी, सर्वकल्याणकारी बना सके।

शास्त्रों में शब्द को ब्रह्म कहा गया है। हम जब किसी शब्द का उच्चारण करते हैं तो उसका प्रभाव न केवल हमारे मन पर अपितु सारे संसार पर पड़ता है। क्योंकि शब्द का कभी लोप नहीं होता। प्रत्येक शब्द वायुमण्डल में गूंजता रहता है। यह अनुभवसिद्ध बात है कि जिसके प्रति हम शब्दों द्वारा अच्छी भावना प्रकट करते हैं वह व्यक्ति हमारा प्रेमी और शुभचिंतक बन जाता है। इसके विपरीत जिसके प्रति नकारात्मक विचार रखते हैं तो वह व्यक्ति अहित चिंतक और शत्रु बन जाता है। जैन धर्म में पांच समितियों के अन्तर्गत भाषा समिति नाम से वाणी संयम का उल्लेख है। जैन शास्त्रों में भाषा समिति का विशिष्ट वर्णन है। भाषा विषयक संयम को भाषा समिति कहते हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय, वाचालता, और विकथा इन आठ दोषों से रहित तथा आवश्यकता होने पर भाषण में प्रवृत्त होना भाषा समिति है। **“हितमितासंदिग्धाभिधानं भाषा समितिः”** हित, मित और असंदिग्ध वचन बोलने को भाषा समिति कहा है।

मानव जीवन में भाषा विषयक संयम पर अधिक बल दिया गया है। किसी को मेरे वचन से पीड़ा न पहुंचे, इस उद्देश्य से पैशुन्य, हास्य, कर्कश, पर-निन्दा, आत्मप्रशंसा तथा रागद्वेषवर्धक विकथाओं आदि का त्याग करके स्व पर हितकारी वचन बोलना भाषा समिति है। सत्य, असत्य,

सत्यसहित असत्य और असत्य मृषा—ये वचन के चार प्रकार हैं। सज्जनपुरुषों के हितकारी वचन को सत्य कहते हैं। जो वचन न सत्य होता है और न असत्य उसे असत्य मृषा कहते हैं। इस प्रकार सत्य और असत्य मृषा वचन को बोलना तथा असत्य, कठोरता तथा चुगली आदि दोषों से रहित और अनवद्य अर्थात् जिससे पाप का आस्रव न हो ऐसा वचन बोलने वाले साधु के शुद्ध भाषा समिति होती है। जनपद सत्य, सम्मति सत्य, स्थापना सत्य, नामसत्य, रूप सत्य, सम्भावना सत्य, व्यवहार सत्य, भाव सत्य और उपमा सत्य—सत्यवचन के ये भेद हैं। सत्य के विपरीत वचन असत्य है। मनुष्य को ऐसी वाणी बोलना चाहिए जिससे अहंकार न प्रकट हो, दूसरों को श्रुत मधुर होने के साथ स्वयं को भी अच्छी लगे।